IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालयों में प्रबंधन संकाय सदस्यों के व्यवहार की जानकारी : एक अध्ययन

सुनिता ईटोरिया

शोधार्थी

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (C.G.)

अमूर्त -यह शोध पत्र भारत के छत्तीसगढ़ के अनूठे संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करते हुए डिजिटल युग में प्रबंधन संकाय सदस्यों के सूचना खोज व्यवहार की जांच करता है। आज के ज्ञान-संचालित समाज में, डिजिटल तकनीक ने व्यक्तियों के जानकारी प्राप्त करने और उस तक पहुंचने के तरीके को बदल दिया है। इस अध्ययन का उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना है कि कैसे प्रबंधन संकाय सदस्य डिजिटल सूचना संसाधनों के विशाल परिदृश्य को नेविगेट करते हैं, उनकी विश्वसनीयता का मूल्यांकन करते हैं, और अपनी शैक्षणिक और व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी सूचना-प्राप्ति रणनीतियों को अनुकूलित करते हैं।छत्तीसगढ़ में प्रबंधन संकाय के सामने आने वाली विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों को समझकर, यह अध्ययन उनकी डिजिटल सूचना साक्षरता को बढ़ाने और तेजी से विकसित हो रहे डिजिटल युग में प्रभावी सूचना पुनर्प्राप्ति और उपयोग सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियों की जानकारी देना चाहता है।

कीवर्ड: सूचना खोज व्यवहार, डिजिटल युग, प्रबंधन संकाय, छत्तीसगढ़, डिजिटल सूचना साक्षरता, सूचना-प्राप्ति रणनीतियाँ, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, अनुसंधान व्यवहार, ज्ञान प्रबंधन, शैक्षिक अनुसंधान आदि।

1. परिचय

इन दिनों, ज्ञान को एक ऐसी वस्तु के रूप में देखा जाता है जिसका उपयोग हर कोई अपने दैनिक जीवन में कर सकता है। ऐसे कई स्रोत हैं जिनसे कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकता है।

जब सही समय पर सही व्यक्ति तक उचित जानकारी पहुंचाने की बात आती है, तो पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ उनके पारंपरिक प्रिंट-आधारित मॉडल से अधिक आधुनिक, डिजिटल मॉडल में विकसित हुई हैं। सूचना का युग आ गया है. आज हम सूचना युग का हिस्सा हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि जानकारी व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। उपयोगी संसाधनों की प्रचुरता के साथ पुस्तकालय ज्ञान के एक केंद्रीकृत केंद्र के रूप में विकसित हुए हैं।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण आए तीव्र और गहन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप पुस्तकालय परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं।

एक समय केवल पुस्तकें उधार लेने का स्थान होने के कारण, पुस्तकालय ऐसे केंद्रों के रूप में विकसित हो गए हैं जहां लोग संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच सकते हैं। यदि यह समझा जाए कि विभिन्न उपयोगकर्ताओं की अलग-अलग प्रकार की आवश्यकताएं हैं, तो आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ता को उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान की जा सकती हैं। [1]

इन दिनों, कोई भी समुदाय ज्ञान के केंद्रीय केंद्र के बिना कार्य नहीं कर सकता। यह ज्ञान के प्रसार के सबसे महत्वपूर्ण माध्यमों में से एक है और इस प्रकार पेशेवरों, विशेषकर शिक्षाविदों के लिए अपरिहार्य है।

जानकारी:

यह डेटा मानव अस्तित्व के लिए बिल्कुल महत्वपूर्ण है। यह डेटा कहां से और कैसे आ रहा है, इसकी गहन जांच होनी चाहिए। अनुसंधान सबसे प्रसिद्ध स्थानों में से एक है जहां ज्ञान जड़ें जमाता है, और हालांकि यह एक आसान प्रक्रिया नहीं है, लेकिन यह असंभव भी नहीं है। आज हम जो कुछ

भी जानते हैं वह अतीत में की गई जाँचों का परिणाम है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान और मानविकी में पेशेवरों के प्रयासों से समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी जानकारी लगातार पैदा हो रही है । अनुसंधान एवं विकास के महत्वपूर्ण महत्व को पहचानते हुए, सरकार इन क्षेत्रों में भारी निवेश कर रही है, जिससे नए ज्ञान का प्रसार हो रहा है जिसे इस घटना का अध्ययन करने वालों द्वारा "सूचना विस्फोट" करार दिया गया है।

आजकल, आपके लिए आवश्यक किसी भी डेटा को प्राप्त करना आसान और त्वरित है। चाहे उन्हें इसका एहसास हो या न हो, सरकारें और गैर-सरकारी संगठन अपने दैनिक कार्यों के दौरान डेटा उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए, कानून और व्यवस्था की रक्षा के लिए अपने नियमित काम के दौरान, पुलिस विभाग आतंकवाद और भ्रष्टाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इतनी ही मात्रा में डेटा हमें अन्य सरकारी एजेंसियों द्वारा भी उपलब्ध कराया जाता है। व्यवसायों और कारखानों की गतिविधियाँ व्यवसाय और औद्योगिक डेटा उत्पन्न करती हैं। [2]

जानकारी चाहने वाला व्यवहार:

शब्द "सूचना मांगने वाला व्यवहार" किसी संदेश की खोज में किसी व्यक्ति द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई को संदर्भित करता है जो वास्तविक या काल्पनिक आवश्यकता को पूरा करता है।

ज्ञान की खोज तब शुरू होती है जब किसी व्यक्ति को यह एहसास होता है कि उसकी जानकारी का वर्तमान भंडार किसी विशेष मुद्दे या समस्या से निपटने के लिए अपर्याप्त है। जब वह विचार कायम नहीं रहता, तो प्रक्रिया पूरी हो जाती है। ऐसे संदर्भों और संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला है जिनसे लोग ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

सूचना वैज्ञानिक सूचना भंडारण, पुनर्प्राप्ति और व्युत्पन्न वितरण प्रौद्योगिकियों में नवाचारों से प्रभावित होते हैं। जानकारी ढूंढ़ने वाले व्यक्ति को इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि कितना डेटा सहेजा गया है या किस प्रकार का डेटा रखा गया है। वितरण तकनीकों का उपयोगकर्ता पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा, जबकि पुनर्प्राप्ति प्रक्रियाओं की गहराई एक गौण विचार होगी। अनुभवजन्य ज्ञान के साथ-साथ कॉर्पोरेट मानव अनुभव और मनोरंजन से संबंधित, ये सभी क्षेत्र हैं जहां नई तकनीक से सूचना चाहने वाले व्यवहार को प्रभावित करने की उम्मीद है। [3]

व्यक्तिगत और समूह दोनों प्रकार के मानवीय अनुभवों के चाहने वालों को निकट भविष्य में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन sदेखने की संभावना नहीं है। जैसे-जैसे अधिक लोग सामूहिक मानवीय अनुभव द्वारा कवर की गई विषय-वस्तु की व्यापकता की सराहना करने लगेंगे, यह संभव है कि भविष्य में सभी प्रारूपों का अधिक डेटा संरक्षित किया जाएगा। तब उपभोक्ताओं के उपयोग के पैटर्न में महत्वपूर्ण बदलाव आएगा।

पुस्तकालय विज्ञान, सूचना विज्ञान, संचार विज्ञान, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान सहित कई विषय अध्ययन करते हैं कि लोग जानकारी कैसे खोजते हैं। उपयोगकर्ता ज्ञान की तलाश करते हैं क्योंकि उन्हें एक ऐसी आवश्यकता होती है जिसके बारे में उनका मानना है कि इसे केवल पुस्तकालयों, सूचना केंद्रों, ऑनलाइन सेवाओं या यहां तक कि किसी अन्य व्यक्ति जैसी औपचारिक प्रणाली से परामर्श करके ही पूरा किया जा सकता है। कई चर लोगों की जानकारी खोजने की प्रवृत्ति को प्रभावित करते हैं। पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों के प्राथमिक लक्ष्य के रूप में, यह आंतरिक रूप से जनता को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ है। [4]

दूसरे शब्दों में, सूचना प्राप्त करने वाला व्यवहार विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने की अनिवार्यता के जवाब में ज्ञान की जानबूझकर की गई खोज है। किसी व्यक्ति की खोज यात्रा में मानव और गैर-डिजिटल सूचना संसाधनों दोनों के साथ बातचीत शामिल हो सकती है। शिक्षाविदों की सूचना आदतें पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में एक गर्म विषय है। पुस्तकालयों सहित सूचना उद्योग में कोई भी यह पता नहीं लगा सकता कि उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जाए। शिक्षा क्षेत्र में

पेशेवरों की जानकारी मांगने की आदतें शोध के एक बड़े समूह का विषय हैं। किसी व्यक्ति का जानकारी मांगने का व्यवहार तीन कारकों से निर्धारित होता है: आसानी से उपलब्ध जानकारी, व्यक्ति का प्रयास स्तर, और व्यक्ति का पूर्व अनुभव। जानकारी। ज्ञान की तलाश करना मानव होने के लिए उतना ही मौलिक है जितना कि सांस लेना। "खोजना" किसी ऐसी चीज़ का पता लगाने के प्रयास को दर्शाता है जिसे साधक आवश्यकता को पूरा करने में नियोजित करना चाहता है।

नई जानकारी की खोज बौद्धिक विकास का आधार है। चूँकि जानकारी सामाजिक प्रगति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि यह सटीक और संपूर्ण दोनों हो। छात्रों को व्याख्यान देने से पहले, प्रोफेसर को स्पष्ट रूप से विषय पर कुछ शोध करना होगा। प्रासंगिक डेटा प्राप्त करने के लिए उन्हें विभिन्न प्रकार के संदर्भों की आवश्यकता थी।

शैक्षणिक समुदाय के सदस्यों के लिए सूचना और ज्ञान तक पहुंच को सुविधाजनक बनाने में पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूचना मांगना एक उपयोगकर्ता द्वारा सूचना की तलाश, मूल्यांकन, चयन और उपयोग करने की प्रक्रिया है। इस शोध का उद्देश्य यह जानना था कि छत्तीसगढ़ में विश्वविद्यालय के कर्मचारी अपनी ज़रूरत की जानकारी कैसे प्राप्त करते हैं।

2. उद्देश्य:

- उत्तरदाता के उद्देश्य और सूचना प्राप्त करने के तरीकों का पता लगाना।
- सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से ई-संसाधनों के उपयोग का पता लगाना।
- उन बाधाओं की जांच करना जो उत्तरदाताओं के सूचना मांगने के रवैये में हस्तक्षेप करती हैं।

3. साहित्य की समीक्षा

एक साहित्य समीक्षा एक विशिष्ट समय अवधि के भीतर अध्ययन के एक निश्चित क्षेत्र में प्रकाशित जानकारी की चर्चा है। पूर्व और वर्तमान शोध का एकीकरण साहित्य समीक्षा का प्राथमिक फोकस होगा। किसी के ज्ञान में अंतराल को भरने के लिए इंटरनेट जैसे इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों और प्रतिष्ठित प्रकाशनों के विभिन्न लेखों का उपयोग करना अच्छी जानकारी प्राप्त करने वाले व्यवहार का एक उदाहरण है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र की पत्रिकाओं का उल्लेख है।

बुलेटिन ऑफ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, जर्नल ऑफ द अमेरिकन सोसाइटी फॉर इंफॉर्मेशन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, जर्नल ऑफ एजुकेशनल मीडिया एंड लाइब्रेरी साइंस, जर्नल ऑफ एप्लाइड साइंस रिसर्च, एनल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, लाइब्रेरी और जर्नल जैसे जर्नल दस्तावेज़ीकरण से परामर्श लिया गया। साहित्य की समीक्षा करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अकादमिक कर्मचारियों की सूचना-प्राप्ति की आदतों के बारे में जानकारी की कमी है। [5]

अध्ययन में कहा गया है कि सूचना निर्माण, उपयोग और खोज प्रक्रिया को उन चरणों के अनुक्रम के रूप में सोचा जा सकता है जिनसे व्यक्ति गुजरते हैं, और ये प्रक्रियाएँ एक साथ हो सकती हैं। किसी व्यक्ति या समुदाय की सूचना मांग पर प्रतिक्रिया देने के तरीके को सूचना मांगने का व्यवहार कहा जाता है। [6]

हालाँकि अब हर किसी के पास इंटरनेट तक आसान पहुँच है, फिर भी कई उत्तरदाता अभी भी पुस्तकालय की बार-बार यात्राएँ करते हैं; जिस आवृत्ति से वे ऐसा करते हैं वह व्यापक रूप से भिन्न होती है। [7] स्कूलों की एक छोटी संख्या को छोड़कर, अध्ययन में शामिल सभी विश्वविद्यालयों के उत्तरदाता नियमित रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। कॉलेज के संकाय और प्रशासन जानकारी के प्राथमिक औपचारिक स्रोतों के रूप में किताबों और मोनोग्राफ पर भरोसा करते हैं, जबकि आमने-सामने चर्चा होती है। सहकर्मियों और दोस्तों के साथ बातचीत करना उनके सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले अनौपचारिक सूचना संसाधनों में से एक है। [8] जब उन्हें ज्ञान की अप्रत्याशित आवश्यकता होती है, तो वे

या तो अपने निजी पुस्तकालय या अपने रोजगार के स्थान पर पुस्तकालय से परामर्श लेते हैं। [9]

अधिकांश प्रोफेसरों ने अपने शिक्षण, सतत शिक्षा और विद्वतापूर्ण गतिविधियों में मदद के लिए सामग्री की तलाश की। भारतीय विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं ने पाया कि उनके 256 सामाजिक विज्ञान संकाय सदस्यों में से अधिकांश ने अपनी ज्ञान संबंधी मांगों को पूरा करने के लिए पत्रिकाओं, पुस्तकों, सरकारी पत्रों और संदर्भ स्रोतों की ओर रुख किया। [10]

मनुष्य विभिन्न कारणों से सक्रिय रूप से जानकारी खोजता है, जिसमें अपने ज्ञान और समझ का विस्तार करना, वर्तमान घटनाओं के साथ अपडेट रहना और मुद्दों का समाधान ढूंढना शामिल है। [11]

4. अनुसंधान डिजाइन

अध्ययन में नमूने की जनसांख्यिकी के साथ-साथ उनकी सूचनात्मक मांगों और सूचना-प्राप्ति गतिविधियों के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए एक सर्वेक्षण का उपयोग किया गया। किसी सर्वेक्षण के परिणामों को उस संपूर्ण जनसंख्या पर लागू करना संभव है जिसका प्रतिनिधित्व करना है।

प्रारंभिक परीक्षण के सीमित नमूने के हिस्से के रूप में आरएसयू प्रोफेसरों को पच्चीस प्रश्नावली दी गईं। उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके सत्यता का निर्धारण किया गया। हमें प्राप्त फीडबैक के आधार पर प्रश्नावली में और समायोजन किए गए। एक बार सर्वेक्षण को संशोधित करने के बाद, इसे विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों को भेज दिया गया।

एकत्रित डेटा:

जनसंख्या और नमूनाकरण:

इस शोध का उद्देश्य छत्तीसगढ़ में विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की जानकारी मांगने की आदतों की जांच करना है। छत्तीसगढ़ 54 विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों का घर है।

54 संस्थानों में से केवल पांच को परीक्षा निकाय के रूप में उपयोग किया गया था। इन विश्वविद्यालयों के परीक्षा बोर्डों का अंततः आरएसयू विश्वविद्यालय में विलय हो गया।

यहां एकत्रित डेटा को लक्षित दर्शकों की जरूरतों को पूरा करना चाहिए। बैंकॉक के राजभट विश्वविद्यालय के शिक्षक पाठ्यपुस्तकों, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों को अपने शीर्ष तीन पठन स्रोतों के रूप में स्थान देते हैं। उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें व्याख्यान की तैयारी, ज्ञान रखरखाव और अनुसंधान परियोजनाओं के लिए इसकी आवश्यकता है। [12]

ज्ञान पुस्तकालयों में संग्रहीत होता है, जो प्रत्येक शैक्षिक प्रणाली का एक अनिवार्य पहलू है। किसी पुस्तकालय को तब प्रगति हुई माना जाता है जब वह अपने संरक्षकों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो जाता है। [13]

• मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर
• एमिटी यूनिवर्सिटी, रायपुर
• श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय - [एसआरयू], रायपुर
• महर्षि प्रबंधन एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बिलासपुर परिसर - [MUMT], बिलासपुर
• एएएफटी यूनिवर्सिटी ऑफ मीडिया एंड आर्ट्स - [एएएफटी], रायपुर
• पं. दीन दयाल उपाध्याय मेमोरियल आयुष और स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय - [एएचएसयू], रायपुर।

अनुसंधान कार्यप्रणाली पर आधारित है, जो स्पष्ट मानदंडों और प्रक्रिया का एक वैज्ञानिक सेट है जिसके विरुद्ध ज्ञान के दावों का मूल्यांकन किया जाता है। अनुसंधान तकनीक शोधकर्ता द्वारा नियोजित समग्र रणनीति का वर्णन करती है। आम आदमी के शब्दों में, अनुसंधान पद्धति उन व्यापक सिद्धांतों और आदर्शों को संदर्भित करती है जो अकादमिक जांच का मार्गदर्शन करते हैं।

हमने उपयोगकर्ता समुदाय से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए एक अच्छी तरह से संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया, यहां छह नामित राज्य संस्थानों में संकाय सदस्यों का प्रतिनिधित्व किया गया। उत्तरदाताओं को यथासंभव खुला और ईमानदार रहने के लिए प्रेरित किया

गया। लगभग 850 प्रश्नावली यादृच्छिक रूप से भेजी गईं, लेकिन केवल 663 ही उपयोगी डेटा के साथ लौटाई गईं, जिससे वे इस जांच के लिए नमूना बन गईं। 78 प्रतिक्रियाएँ थीं, जो कि 78 है।

तालिका 1 विश्वविद्यालयवार उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.सं. _	विश्वविद्यालयों	वितरित प्रश्नावली की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	को PERCENTAGE
1.	मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर	180	100	55.55
2.	एमिटी यूनिवर्सिटी, रायपुर	160	96	60
3.	श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय - [एसआरयू], रायपुर	180	120	66.66
4.	महर्षि प्रबंधन एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बिलासपुर परिसर - [MUMT], बिलासपुर	160	140	87.5
5.	एएएफटी यूनिवर्सिटी ऑफ मीडिया एंड आर्ट्स - [एएएफटी], रायपुर	180	85	47.22
6.	पं. दीन दयाल उपाध्याय मेमोरियल आयुष और स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय - [एएचएसयू], रायपुर	180	110	61.11

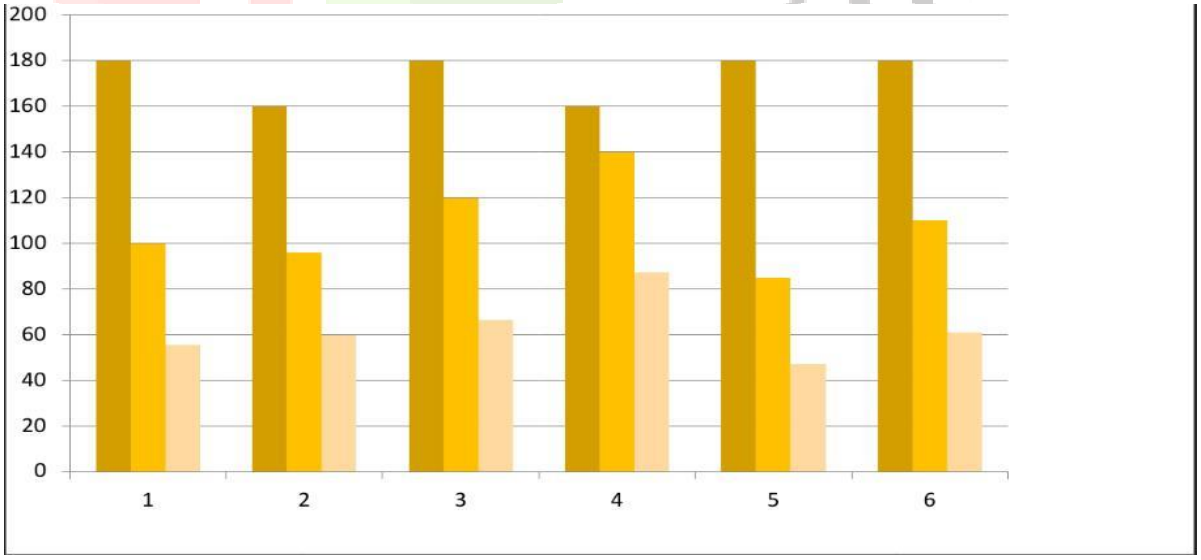

5. निष्कर्ष:

1. लोगों को केवल वह जानकारी देना पर्याप्त नहीं है जिसकी उन्हें तलाश है। हमें समग्र रूप से उनके सूचना मांगने के व्यवहार को ध्यान में रखना होगा। इसके बजाय, किए जाने वाले अधिकांश

कार्यों में यह पता लगाना शामिल है कि व्यवस्था की संरचना और कार्यान्वयन कैसे किया जाए ताकि यह उत्पन्न होने वाली किसी भी रिश्ते की समस्या को हल कर सके , साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए डेटा के प्रारूप और स्थान को भी देख सके।

2. संपूर्ण रूप से स्थानांतरित कर दिया गया। दूसरे शब्दों में, सूचना उपयोग पैटर्न के प्रयास की सफलता या विफलता न केवल नियोजित गतिविधियों (जैसे दस्तावेज़ आदान-प्रदान, प्रस्तुतियाँ इत्यादि) से निर्धारित होती है, बल्कि उन तत्वों से भी निर्धारित होती है जो आंतरिककरण में बाधा डाल सकते हैं, भ्रमित कर सकते हैं या यहां तक कि चोट भी पहुंचा सकते हैं।

3. यह प्रभावित करता है कि लोग ज्ञान की खोज और उपयोग कितनी उत्पादकता से करते हैं। यह काफी हद तक एक मानवीय, प्रक्रिया और तकनीकी मुद्दा है। इसके पांच भाग इस प्रकार हैं: अध्ययन करना, चर्चा करना, उपयोग करना और साथ मिलकर काम करना।

प्रतिक्रिया संदर्भ

[1] रश्मी गुजराती, "डिजिटल मार्केटिंग: बदलता उपभोक्ता व्यवहार," *रेस/ गेट* , 2020, [ऑनलाइन]। उपलब्ध: https://www.researchgate.net/publication/351274642_Digital_marketing_changing_consumer_behaviour

[2] अफजल बाशा, "बैंगलोर शहर में फैशन स्टोर्स के विशेष संदर्भ में विजुअल मर्चेंडाइजिंग की महत्वपूर्ण भूमिका और उपभोक्ता खरीद व्यवहार पर इसके प्रभाव पर एक अध्ययन," *रेस/ गेट*, 2021.

[3] राजसी जोशी, "भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटल बैंकिंग को अपनाने पर ग्राहकों की धारणा पर एक अध्ययन," *एसएसआरएन*, 2019।

[4] क्रिस्टियन पिज़्ज़ुट्टी, "ग्राहक यात्रा के खरीद के बाद के चरण में सूचना खोज व्यवहार," *स्प्रिंगरलिंक*, 2022।

[5] पेट्रोस पालिस, " समुद्री छात्रों की सूचना आवश्यकताएं और सूचना-प्राप्ति व्यवहार: PRISMA पद्धति का उपयोग करके एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा," *रिसर्चगेट* , 2022।

[6] एन. सिंह, "मध्य प्रदेश (भारत) में विशेष उच्च शैक्षणिक संस्थानों के अकादमिक पुस्तकालयों का एक अध्ययन," *इंट। जे इंजी. आवेदन. विज्ञान. मैनेज.* , 2021.

[7] के. अश्वनी, "डिजिटल युग में गोपनीयता और सुरक्षा: समकालीन चुनौतियाँ और भविष्य की दिशाएँ," 2019।

[8] वनमाला हीरानंदानी, "डिजिटल युग में गोपनीयता और सुरक्षा: समकालीन चुनौतियाँ और भविष्य की दिशाएँ," *टेलर फादर।*, 2011.

[9] कॉन्स्टेंटिनो आई. क्लोमौडिस, "समुद्री छात्रों की सूचना आवश्यकताएं और सूचना-प्राप्ति व्यवहार: प्रिज्मा विधि का उपयोग करके एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा," *रेस/ लोगो*, 2022।

[10] चिया रोस्तमी, " डिजिटल युग में सूचना चाहने वाला व्यवहार: इंटरनेट, वैज्ञानिक डेटाबेस और सामाजिक नेटवर्क के संकाय सदस्यों द्वारा उपयोग," *एमराल्ड इनसाइट*, 2021।

[11] थाओ ऑरेनसालो, "डिजिटल युग में उद्यमियों की सूचना-खोज व्यवहार-एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा," *टेलर फादर।*, 2022.

[12] एलाहे होसैनी, "डिजिटल युग में सूचना चाहने वाला व्यवहार: इंटरनेट, वैज्ञानिक डेटाबेस और सामाजिक नेटवर्क के संकाय सदस्यों द्वारा उपयोग," *रेस/ गेट* , 2021.

[13] रवि एन. बेल्लारी, "ई-संसाधन एक अकादमिक संस्थान के शिक्षण और अनुसंधान कार्य के लिए वरदान हैं: एनएमआईएमएस (डीम्ड यूनिवर्सिटी) इंजीनियरिंग संकाय, मुंबई द्वारा ई-संसाधनों के उपयोग और जागरूकता पर एक सर्वेक्षण," 2019।